धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

जनवरी - 2013

* देवात्मा के फरमान
* देव धर्म की जान
* नेताओं की नैतिक भूलें
* लम्हों ने ख़ता की, सदियों ने सज़ा पाई
* अनोखे प्यार और त्याग की गाथा
* श्री देव गुरू भगवान् के सम्बन्ध में मेरी आंखों देखी घटनाएं
* जीवन प्रसंग
* शुभ संग्राम

पृष्ट 20 का बाकी

देवात्मा के फरमान

* यह मौत की आखरी मंज़िल है कि जहां भूली बात ज़हर मालूम होती है।- - - नीच अनुरागों में जहां कोई दखल दे, वहां उसको बुरा मालूम होता है, तो समझ लेना चाहिए कि उसकी आत्मिक मौत का समय निकट आ रहा है।
* किसी जन में उच्च परिवर्तन नहीं आता, तो क्या तुम उदास होते हो? या यह बात है कि मुर्दा जाए दोज़ख़ में या बहिश्त में, मुल्लाओं को हलवे मांडे से काम। यदि कोई मुख़ालिफ कुछ कहता है तो उसको सुनो, एक दूसरे की बात से फायदा उठाओ।
* जिसका जीवन मुख्य काम बन गया, वह तो समाज से बाहर जाकर भी वही काम करेंगे।
* जो जन अपनी 'मैं' का त्याग नहीं करते, नेचर में उनके ख़िलाफ़ बग़ावत आ जाती है।
* जो कहता है कि सब कुछ जानता हूँ, वह आगे कुछ नहीं जान सकता।
* जो और चीज़ों का है, (पैसा, पद, प्रभुत्व) वह हमारा नहीं।
* क्या तुम अपने आप को इस बात से ऊपर महसूस करते हो कि तुम किसी के तरफ़दार नहीं बनोगे।
* हमें इन्तज़ार करना पड़ेगा कि जब कोई ऐसे आदमी पैदा हों कि जिनके निज के साधन चलें। वह अपने विरूद्ध सोचें और लिखें।
* जो जन झूठी बातों का विश्वास करता है, वह मेरा नहीं, झूठ का है।
* मेरे दिल पर छुरियां चलती हैं जब कोई पैसे भी लेता है, पर काम नहीं करता।
* जो आदमी पैसे लेकर भी काम न करते हों ऐसे आदमी पूरे ठग होते हैं, जब मैं उन्हें ठग कहता हूँ, तो बिल्कुल ठीक कहता हूं।
* पैसे लेकर और काम हो सकते हैं, पर धर्म प्रचार का काम नहीं हो सकता।
* विश्वासघाती होना, ठग होना एक ही बात है।
* नीच घृणा के साथ भर कर यदि कोई किसी का मुंह देखना नहीं चाहता, तो उसका भला कैसे करेंगे।
* जो अंहकारी हैं, दूसरों को घृणा करते हैं, उनका बुरा चाहते हैं, उनमें धर्म कहां? यह महा नीच पतनकारी भाव जहन्नुमी भाव हैं।
* सच्चा प्रचारक वह होता है कि जो घृणा किया जाता है, फिर भी भलाई का काम किए जाता है।
* नीच घृणा न करो, सरल रहो। नीच घृणा वह आग है कि जो आत्मा को जला देती है।
* कर्मचारी ऐसी हालत में हो कि जो दुश्मन भी हों, उनका भी हित कर सकता हो।

धर्म जीवन

खण्ड 26 अंक 1

जनवरी – 2013

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

देव धर्म की जान

मुझे ख़्याल पैदा हुआ कि क्या देव समाज के सब सेवकों को विशेषकर समाज का काम करने वालों वा प्रचारको को इस बात का ज्ञान है कि देव धर्म या देव समाज की या गुरू महाराज के पैदा किए हुए मिशन की जान क्या है? उसके सही प्राण क्या हैं? तो मुझे यह अनुभव हुआ के सब सेवकों को तो क्या, सारे प्रचार का काम करने वालों को भी शायद इस बात का सही पता न हो। इसलिए इस विषय पर ध्यान फेरने की अवश्यकता अनुभव हुई। हम सब सेवकों को यह बात दिन और रात की तरह स्पष्ट वा साफ होनी चाहिए और सब सेवकों के सामने रहनी चाहिए कि देव धर्म वा देव समाज की जान क्या है?

इस विषय पर सोचते सोचते मेरा ध्यान अपने गांव कल्याण, (भंटिडा) जो देव समाज का एतिहासिक स्थान है, जो श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज की तपोभूमि रहा है, की ओर चला गया, विशेष कर गांव के पूर्व की ओर की भूमि की तरफ गया, जिसे बाग़ कहते हैं जब कि बाग जैसी वहां कोई भी चीज़ नहीं। कोई बेल बूटे, पेड़, पौधे, फलों वा फूलों का निशान तक नहीं है। इस भूमि को इसलिए बाग़ कहा जाता है क्योंकि 2 या $2\frac{1}{2}$ सौ वर्ष पहले यहां 20 - 30 एकड़ में या इससे भी अधिक एकड़ों में एक सुन्दर, विशाल बाग़ वर्तमान था, यहां अब झाड़ियों आदि के बिना कुछ नहीं। उसका बहुत सा भाग खेती के लिए प्रयोग किया जाता है। जबकि उसे लगाने वाली पहली पीड़ियों के लिए सचमुच ही वह बाग़ था। एक वास्तविकता थी। इसके बाद वह बड़ी चरागाह बनकर रह गया। मैंने भी छोटी उमर में वहां लोगों को पशु चराते देखा है।

उस बाग़ को लगाने के पीछे जम्मू कश्मीर की सरकार का भी हाथ था और वह बाग़ सरकार की ही मलकीयत था। उस बाग़ को पानी देने का पूरा प्रबन्ध था। यहां तक कि एकड़ से भी ज्यादा स्थान पर बने पक्के तालाब से भी उसको ज़रूरत पड़ने पर पानी देने का प्रबन्ध था। उस तालाब की उत्तर की ओर एक कुआं बनाया हुआ था, जिससे पानी लेकर बाग़ को सींचा जाता था। बाग़ की ओर जाने के निशान अब भी नाले और नाली की शकल में हैं। यह बाग़ रेगिस्तान में एक सुन्दर अजूबा और रमणीक स्थान था। 50 - 60 वर्ष तक यह एक वास्तविकता थी। उसमें सैंकड़ों पेड़ हज़ारों, लाखों पौधे थे, आम, जामुन, अंगूर जैसे फल वहां लगते थे। भांति भांति

के फलों की भी वहां बहार थी। वह सब कुछ कहां चला गया, जबकि पानी का स्त्रोत अब भी वहां है। नहर के पानी भी वहां पर हैं, उसकी देख रेख कश्मीर के राजे वा पुरोहित, वा पंडित करते थे, वहां संस्कृत वा हिन्दी का स्कूल भी था। धीरे धीरे राजे की मौत वा मुख्य पुरोहित की मौत के बाद, पानी होने पर भी बाग़ को सींचने का काम घटता गया। पंडितों के कई परिवार बन गए, इस काम में किसी की रूचि न रही। इसलिए कुछ समय में सब कुछ लोप हो गया और बाग़ जैसी सुन्दर चीज़ का नामोनिशान मिट गया। केवल 'बाग' का नाम ही रह गया।

गुरू का मिशन, गुरू के सेवक और सेविका, कर्मचारी दल, मन्दिर संस्थाएं वा जायदाद आदि बाग़ समान है, जैसे अलम जी ने भजन में लिखा है, "सेवक दल इस जगत में सुन्दर बाग़ समान, जिसके अकसर फूल हैं, हित की महकती कान"

देव समाज के प्रबन्धक, उसके कर्मचारी, उसकी पुस्तकें, उसकी संस्थाएं मन्दिर विकासालय, आश्रम, धन, जायदाद, सेवक सेविका आदि सब इसी बाग़ के पेड़, पौधे हैं, इन सबका एक ही मन्तव्य हैं कि देव धर्म की अद्वितीय विज्ञानमूलक शिक्षा का अधिकारी जनों के भीतर प्रचार और अधिकारी जनों को नीच गतियों और नीच शक्तियों से मुक्त कर के उनके भीतर उच्च गति दायनी उच्च शक्तियों का संचार करना। यह अद्वितीय कारज देव धर्म का एक मात्र लक्ष्य है। इस काम में सही सहायता ही, उक्त देव धर्म के बेल, पेड़, पौधों की असली खुराक है।

देव धर्म का अद्भुत वा अद्वितीय कारज अर्थात नीच जीवन से मोक्ष और उच्च शक्तियों में विकास केवल एक मात्र जल अमृत ही कर सकता है, और कोई विधि नहीं। लाख दुनियावी योग्यताओं को रखकर भी कोई नहीं कर सकता' जैसे पानी से सींचने के बिना कोई बाग़ नहीं बन सकता, बेशक किसी के पास कितनी ही फौजें, राज पाठ हो, पानी, पेड़ पौधे वा बागों की जान हैं, उसी प्रकार एक अद्भुत सर्व्वोच्च जल अमृत के बिना कोई नीच जीवन से निकालने और उच्च जीवन के संचार करने का लाख योग्यता रखकर, ताकतें, पोजीशने, रुतबे रखकर भी कोई नहीं कर सकता। वह अद्भुत जल अमृत है, परम पू० भगवान देवात्मा के अद्वितीय सत्य और शुभ अनुरागों के देव प्रभाव जैसा पानी बागों, पौधो की जान है, उसके बिना वह बच नहीं सकते, उसी प्रकार देव प्रभाव ही देव धर्म वा उसके कारज की जान और प्राण हैं, जैसे जैसे अधिकारी मनुष्यों के भीतर देव प्रभावों तक रसाई होती है और बढ़ती है, यों त्यों देव धर्म का बाग़ लहलहाने लगता है, महक उठता है, उच्च परिवर्तनों का प्रवाह बहने लगता है, नारकी जीवन बदलते हैं, धरती पर स्वर्ग आता है।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज ने बड़े यत्नों के साथ देव प्रभावों तक रसाई पाई थी, उन्होंने देव अमृत प्राप्ति का और आगे अधिकारी रूहों के भीतर संचार करने का भरपूर काम किया। देव धर्म की बगिया को लहलहा दिया। भाई अमर सिंह जी, भाई मोहनदेव जी, श्रीमान स्वामी गोबिन्दराम जी, स. जमीयत सिंह जी आदि अन्य कर्मचारी, देव प्रभावों को पाने की योग्यता पाते गए उसी मात्रा अनुसार देव धर्म का बाग़ आप हरा भरा रहता रहा, उन हस्तियों ने आप उच्च जीवन पाया, आत्म रक्षा

और विकास पाया और अन्य सैंकड़ों सेवकों को उनकी योग्यता अनुसार नीच जीवन से निकालने का और उच्च जीवन प्रदान करने का अद्भुत कारज किया। उससे आगे श्रद्धेय धर्म बल जी ने, श्रीमान निर्मल सिंह जी कोहारवाला, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी, कनल जी आदि ने, परम पू० भगवान के प्रभावों तक रसाई पाकर फील्ड में कमाल का काम किया। गुरू महाराज की नायाब शरण में रहकर श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी ने गुरू महाराज के प्रभावों तक रसाई पाकर बड़ा सुन्दर कारज किया। बड़े सुन्दर उच्च परिवर्तन पैदा किए और जितना उनके लिए सम्भव हुआ, गुरू मिशन को बचाए रखने के लिए यत्न किया, परन्तु उनकी ज़िन्दगी ने भी वफ़ा न किया।

बागों, फसलों की तरह देव समाज वा देव धर्म भी जीवित अस्तित्व है। देव प्रभावों का अमृत मिलता है तो यह जीवित है और जीवित रहता है। यदि इस अमृत का प्रबन्ध न हो सके और कार्यकर्ताओं की उस तक रसाई होनी बन्द हो जाए, तो बिन पानी बागों की तरह मुरझाता, सूखता और जितनी देर उक्त अमृत जल का प्रबन्ध न हो, उतनी देर के लिए वह मर सकता है, हो सकता है कि कल्याण के बाग़ की तरह उसका नाम ही बाकी रह जावे।

जैसे यदि बाग़ के पेड़ पौधे हरे भरे हैं, फूल फल महकते, टहकते हैं, कोयलें कूकती हैं, पंछी चहचहाते हैं, मोर पैलें पाते हैं, तो बाग़ हरा भरा, जीता जागता है और कायम है। इसी प्रकार यदि देव समाज का प्रबन्ध चलाने वाले, विशेष रूप से उसके सच्चे हितैषी वा सहायक और साथी प्रचारक वा कर्मचारी अद्वितीय देव अमृत जल तक रसाई पाने की किसी अंश या भरपूर योग्यता रखते हैं, और उसके साथ वह जीवन के महा रोग अंह जात कोढ़ - घमंड, स्वार्थ, नीच घृणा, स्वेच्छाचारिता, ईर्षा, द्वेष आदि से मुक्त हो रहे है और वह देव प्रभावों के नायाब, अद्वितीय जीवन अमृत जल पा पाकर उसको और अधिकारी जनों में संचार कर रहे है, पापी जन बदल रहे हैं हर वर्ष 4 - 5 बड़े बड़े उच्च परिवर्तन हो रहे हैं, वह देव समाज के अद्वितीय देव प्रभावों से जुड़कर भले वा नेक बन रहे हैं, उनके परिवार वा सम्बन्धी जुड़ रहे हैं, तो देव समाज का अस्तित्व भी जिन्दा है, हरा भरा है, महकता है, सेहतमन्द है, परन्तु यदि देव प्रभावों का ठोस कारज सालों तक कुछ भी नहीं हो रहा, सालों तक कोई एक भी उच्च परविर्तन नहीं हो रहा, कोई नये नेतराम जी, नये नौध सिंह जी, कोई नये डाक्टर सिरी राम जी, कोई नये सुरजन सिंह जी, कोई नये टहल राम जी आदि नहीं आ रहे, उच्च परिवर्तनों की ओर से पूर्णता खुशकी छा जाती है, तो समझो मामला गड़बड़ है, समाज मर रही है। दम तोड़ रही है, कौमा में है, और भवन चाहे कितने बड़े बन गए हों, विद्यिक संस्थाओं में चाहे संख्या कितनी बढ़ गई हो, धन जायदाद कितनी बढ़ गई हो। बड़ी एयर कंडीशन कारें वा सुख स्वाद के सामान कितने बढ़ गए हो। सुन्दर कमरे, बढ़िया बाथरूम कितने बन जाएं, सुन्दर फूलों से बगीचे कितने सुन्दर बना लें, गुरू का मिशन रूपी बाग़ सूख रहा है, ख़त्म हो रहा हैं, केवल नाम रह रहा है।

मुझ तुच्छ को देव समाज से जुड़े हुए 63 वर्ष हो गए हैं। मैंने भी गुरू मिशन के पाकिस्तान बनने के बड़े विघ्न के बावजूद महकता और किसी

अंश टहकता देखा है। मेरा अपना स्वंय का परिवर्तन भी बड़ी निशानी है। मैंने 20-20 या इससे भी अधिक कर्मचारी भिन्न क्षेत्रों में पार्टीयों समेत काम करते देखे हैं। मोगे विकासालय के कमरे, ऊपर कर्मचारियों के साथ, नीचे सेवकों सत्संगियों वा कर्मचारियों से भरे देखे हैं। 15 दिन हर माह विकासालय का सैशन, जिसमें कर्मचारियों की सभाएं अलग होती थी। आम हररोज तीन कभी चार सभाएं होती थी। हर महोत्सव और जलसे पर बड़ा जलूस निकलता था। विकासालय के जलसे समय समय विकासालय, नारी आश्रम, स्कूल के कमरे और बाहर ग्राऊंड में भी 30-40 चारपाईयाँ रात को लगी होती मैंने देखी हैं। गुरू मिशन का सुबह चार बजे घण्टा बजता तो मोगा भी हरकत में आ जाता। प्रभात फेरीयां होती। महोत्सव पूरे 4 दिन होता था। तीन लैक्चर होते। दान पार्टीयां जाती। कर्मचारियों की सभा हररोज़ होती, यह सब कुछ लोप हो गया। इससे साफ प्रगट होता है कि हमारे अन्दर, प्रबन्ध के अन्दर गुरू अमृत तक, देव प्रभावों तक रसाई पाने की समर्थ्य ख़त्म हो चुकी है। हम सबको जो सच्चे दिल से, तन, मन से गुरू मिशन को जीता जागता देखना चाहता है, उसके लिए सच्चा त्याग करना चाहता है, उसे अपने वा परिवार के लिए जान और प्राण की चीज़ समझता है, तो हम सबको, तो हमें इधर उधर के सब चक्करों को छोड़कर सबसे बड़ा फिक़र वा डर इस बात का होना चाहिए कि हमारी गुरू के प्रभावों तक सच्ची रसाई कैसे हो, हम उसके लिए क्या उपाय वा संग्राम करें। यह सबसे बढ़कर सोचने वा फिकर करनेवाली बात है। अपनी ओर गहराई से ध्यान ले जाने की अवश्यकता है। यदि 1-2 या इससे अधिक जन सच्चे अर्थो में गुरू के देव प्रभावों तक रसाई करने के योग्य हो जाते हैं, तो मर रही समाज वा सहकते मिशन में फिर जान आ सकती है। देव प्रभावों का दुर्लभ अमृत चाहिए।

हमारी देव प्रभावों तक रसाई क्यों नहीं हो रही। किस चीज़ की अवश्यकता है। अड़चन क्या है? इस सम्बन्ध में गुरू महाराज ने स्पष्ट फरमाया है:-

"स्वार्थ, मनमुखता, घमंड और नीच घृणा रखकर कोई मनुष्य देवात्मा से सम्बन्ध स्थापन नहीं कर सकता। न उनकी पूजा करने के योग्य होता है। अंह अनुराग के यह चारों अंग सब के सब आत्मा के लिए पतनकारी हैं। यह नीच भाव मनुष्यों को, परिवारों को, कौमों की, जहां तक सम्भव है, तबाह कर देते है।"

हमारी "मैं" हमारा अंह देव प्रभावों की रसाई के मार्ग में पहाड़ की तरह खड़ा है। यह एक ही अड़चन है, जो कम से कम 2-4 जनों में तो दूर होने की अवश्यकता है। कोई श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी का मार्ग कटिबद्ध होकर अपनाए, इसकी अवश्यकता है। वही गुरू के प्रभावों तक रसाई पा सकते हैं। आप जीवित रहकर समाज को भी जिन्दा रख सकते हैं। श्रद्धेय श्रीमान जी का जीवन इस पक्ष में हमारी रहनुमाई कर सकता है। काश! सहायकारी शक्तियों की तड़पन जोर शोर से बार बार हिलाए, हमें गुरू अमृत तक रसाई पाने के लिए कटिबद्ध करें और हमारे अन्दर से अंह मुक्त सच्चे सूरमें, रूहानी शूरबीर और योद्धे जो अपने अंह से लड़ने के लिए पूरी तरह तैय्यार हों वह शूर पैदा हों।

बलदेव सिंह

नेताओं की नैतिक भूलें

जब नेतागण जीवन के अच्छे नियमों का उल्लंघन करते हैं, तो बड़े बड़े कार्य और बड़ी बड़ी संस्थाएं नष्ट हो जाती हैं। बड़े नेताओं से बड़े कार्यो की अपेक्षा की जाती है। जब वे भूलें करते हैं अथवा कार्य के साथ विश्वासघात करते हैं, तो उसके भयंकर परिणाम होते हैं। महात्मा केशव चन्द्र सैन ने बाल-विवाह के विरुद्ध आन्दोलन चला कर सिविल मैरिज एक्ट जिसको बह्मो एक्ट भी कहते हैं, पास करवाया। इस विधान के अन्तर्गत कोई भी जन चौदह वर्ष से कम आयु की कन्या तथा सोलह वर्ष से कम आयु वाले लड़के का विवाह नहीं कर सकता। यह कानून सम्भवत: सन् 1872 में पास किया गया था। उस ज़माने में यह एक क्रान्तिकारी कदम था। किन्तु जब महात्मा केशव के समक्ष अपनी बेटी को कूचबिहार के राजकुमार से विवाह कर देने का सुझाव आया, तो उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया। यद्यपि उस समय कन्या चौदह वर्ष से कम तथा राजकुमार 16 वर्ष से कम आयु के थे। वर को पढ़ाई के लिए विदेश जाना था, इसलिए उसका विवाह एक औपचारिकतामात्र ही था। परन्तु इस विवाह से उस कानून के महान् असूल की हत्या होती थी, जिसे स्वयं महात्मा केशव ने बड़ी मेहनत से पास कराया था। जीवन के महान् सिद्धान्तों के उल्लंघन के सन्दर्भ में कोई बहाना या कारण स्वीकार नहीं हो सकता। इस विवाह ने एक खलबली मचा दी। उसका विशेष कारण यह था कि यह विवाह कई रूढ़ि विवाह रीतियों के अनुसार कराया गया था कि जिनका ब्रह्म-समाज विरोध करता था। इसके परिणामस्वरूप समाज में विभाजन हो गया। ब्रह्म-समाज इस धक्के से कभी उभर नहीं पाया। महाराष्ट्र के सन्त, दार्शनिक, इतिहासकार और राजनेता न्याय-मूर्ति महादेव गोविन्द राणाडे ने बड़ी वीरता से सुधार कार्य किए और भारतवर्ष की सेवा की। विधवा विवाह की स्वीकृति दिलाने के लिए उन्होंने अपनी शक्ति लगा दी। उनकी पहली पत्नी का निधन हुआ। उन्होंने पूनर्विवाह का फैसला किया। ऐसी आशा की जाती थी कि वह एक विधवा से विवाह करेंगे। परन्तु उन्होंने विधवा से विवाह न करके उच्च लक्ष्य को बहुत क्षति पहुंचाई।

आयरलैण्ड के नेता श्री पारनल के अपने एक अनुयायी की धर्मपत्नी के साथ अवैध सम्बन्ध थे। उनकी इस क्रिया से आयरलैण्ड की स्वतन्त्रता के कार्य को बहुत नुकसान पहुंचा। इतिहास में हम प्राय: पढ़ते हैं कि एक रणनेता के पतन से सम्पूर्ण सेना छिन्न-भिन्न हो जाती है और परिणाम होता है सर्वनाश। इतिहास में हेमू को एक कुशल हिन्दु रणनेता के रूप में चित्रित किया गया है। उसने अपने आपको भारत का सम्राट घोषित कर दिया था। उस समय तेरह वर्षीय अकबर को भारत के राजसिंहासन पर आरूढ़ किया जा चुका था। अकबर के एक बड़े सेनापति बैरम खां ने हेमू के साथ पानीपत के मैदान में युद्ध किया और यदि हेमू गंभीर रूप से घायल न हो गया होता तो शायद जीत भी जाता। पर हुआ यह कि उसकी सेना ने जब अपनी सेना के नेता को नहीं देखा, तो वह भाग खड़ी हुई। समस्त प्राचीन एवं मध्यकालीन भारतीय इतिहास में ऐसे ही दृश्य देखने को मिलते हैं। यहां तक कि उसी पानीपत के मैदान में मरहटों को अहमद शाह अब्दाली के हाथों करारी हार स्वीकार करनी पड़ी क्योंकि मरहटा सेनापति लड़ाई में मारा गया था और सेना की हिम्मत टूट गई थी। मैदाने जंग में लड़ी जाने वाली

लड़ाईयों में नेता का पतन एक विपत्ति है। परन्तु एक नैतिक नेता का पतन तो एक विभीषिका है। नैतिक समाजों के लिये दो जरूरी शर्तो का पूरा होना आवश्यक है। प्रथमत: उसे सिद्धान्तों की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर देने वाला एक सच्चा नैतिक नेता चाहिए और दूसरी ओर उसे एक ऐसे वातावरण की आवश्यकता है कि जिसमें नैतिक पतन किसी मूल्य पर भी सहन न किए जाएं। एक नैतिक भूल को सहन करना समस्त समाज के मनोबल की टूटन को सहन करने जैसा ही है। नैतिक पतन को क्षमा कर देने की नीति का अर्थ है, अनैतिक सिद्धान्तों के लिये नैतिक सिद्धान्तों की बलि दे देना। जब नैतिक अथवा उच्च समाज में एक ऐसे व्यक्ति को जो कि सांसारिकता में डूबा हुआ है अथवा जो सांसारिकता के पुजारी के रूप में प्रसिद्ध है, संस्था प्रधान के रूप में इसलिए स्वीकार कर लिया जाता है, क्योंकि वह बड़ी दुनियावी हस्ती वाला है या बहुत धनवान है, तो वास्तव में नीच आदर्शो के लिए उच्च आदर्शो की बलि चढ़ा दी जाती है। प्राय: ऐसा होता है कि संस्थापक की मृत्यु से कार्य को बहुत हानि पहुंचती है। कारण यह है कि फिर ऐसे दुर्बल एवं दुनियावी वृत्ति वाले लोग उसके कर्त्ता-धर्त्ता बन जाते हैं, जो कि कुछ व्यक्तियों को अपने साथ बनाए रखने के लिये एक के बाद एक नैतिक भूलों को सहन करते चले जाते हैं।

वास्तविक महान नेता हिसाब किताब तमाम साफ रखते हैं। वह अपनी आंखों के सामने नैतिक सिद्धान्तों का दलन देख कर शान्त नहीं बैठ सकते हैं। ऐसे नेता एक दम गिने चुने होते हैं। पर किसी भी नैतिक समाज की वास्तविक शक्ति यही होते हैं।

कितने दु:ख की बात है कि सुधारक ब्रह्म-समाज के अध्यक्ष महोदय ने अपनी अव्यस्क कन्या का विवाह उस रूढ़ि-विधि विधान द्वारा किया, जिसकी वह सार्वजनिक रूप से भर्त्सना करते थे। कैसी विडम्बना है कि एक नैतिक संस्था का जिम्मेवार व्यक्ति अपनी अव्यस्क कन्या का विवाह कर देता है और इस प्रकार अपने नैतिक विश्वासों का हनन करता है और फिर बच जाता है। वह नैतिक संस्था कितनी अभागिनी है जिसमें ऐसे नैतिक आदर्शो के हत्यारे उत्पन्न होते हैं। आज तक विश्व भर में कोई भी संस्था अपनी उच्च मर्यादाओं और परम्पराओं की रक्षा करने में सफल नहीं हुई है। कारण यह कि उसके नेता ही उच्च मर्यादाओं के अनुकूल आचरण नहीं कर पाते हैं। जो संस्थाएं मांस भक्षण के विरुद्ध कटिबद्ध हैं, उन्हीं के अनेक समर्थक और अनुयायी सामिष-भोजी हैं। इस्लाम धर्म में मद्यपान निषिद्ध है, परन्तु आज लाखों मुस्लिम मद्यपान करते हैं। सिक्ख धर्म में धूम्रपान की मनाही है, फिर भी धूम्रपायी केशधाारी विरले नहीं हैं, और वैष्णव लोग जो कि निरामिष भोजी, मद्य के परहेज़ी के रूप में विख्यात थे, आज मद्य और मांस का खूब सेवन कर रहे हैं। जो जन आठ विशिष्ट पापों से मुक्त रहने की प्रतिज्ञा नहीं करता, वह देव धर्म का सदस्य नहीं बन सकता है और न रह सकता है। जब तक हम लोग इस तथ्य पर गर्व करते हैं, तो संसार के अनुभवी लोग हमें बताते हैं कि प्राय: अनुयायी जन अपनी तुष्टिकरण-वृत्ति के द्वारा बड़े बड़े कार्यो की महिमा को धूमिल कर दिया करते हैं और हमे गर्व तक नहीं करना चाहिए, जब तक कि समाजप्रवर्तक के महा-प्रस्थान को कुछ समय न हो जाए। क्योंकि समय बीत जाने के बाद ही असलियत सामने आने लगती है। मेरी ऐसी कामना है और मैं ऐसी प्रार्थना भी करता हूं कि हमारा ऐसा हश्र न हो। मेरी यह प्रार्थना है कि देव समाज में कभी ऐसे जनों का नेतृत्व न हो, जो कि

प्रतिज्ञाओं के भंग को सहन कर लें। वह जन देव समाज के कार्य को दुर्बल बनाएंगे, उन्हें भविष्य में दुनिया के सामने पूरा पूरा जवाब देना होगा।

देव धर्म की महिमा अपार है। यही एकमात्र ऐसी संस्था है जिसके जनों ने आठ पापों - प्रत्येक प्रकार का मांस भक्षण, प्रत्येक प्रकार का नशा, व्यभिचार, एक - निष्ठता भंग (एक पति व पत्नी के जीते - जी दूसरा विवाह करना), चोरी, जुआ, रिश्वत लेना, कर्ज़ा दबा लेना, अथवा अमानत में ख्यानत करना आदि को छोड़ दिया हो।

और भी, यह एक ऐसी संस्था है जिसने महिलाओं का ज़बरदस्ती वैधव्य, विवाहों और मृत्यु आदि पर बे - तहाशा खर्च, वर्णव्यवस्था आदि रीतियों को प्राय: समाप्त कर दिया है। इस संस्था ने अनेक अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न कराए हैं और हर प्रकार के मिथ्या व अनावश्यक अनुष्ठानों और रस्म - रिवाज़ों को समाप्त कर दिया है। इस समाज ने तलाक के विरूद्ध आवाज़ उठाई है। आज की चिन्तन व्यवस्था में देव समाज का यह अत्यन्त साहसी कदम है।

इस संस्था ने ईश्वर - विश्वास का खण्डन करके अनगिनत मिथ्या विश्वासों, अन्ध विश्वासों व मिथ्या आचरणों को सदा के लिए समाप्त कर दिया है। यही एक ऐसी संस्था है जिसने जीवन के हर पक्ष के सन्दर्भ में सत्य और शुभ का झण्डा फहरा दिया है। इसकी महिमा को पहचानने वाले देव धर्मी का यह महान कर्त्तव्य है कि वे इसकी नैतिक सर्वोच्चता को सुरक्षित रखें।

पी. वी. कनल

जीवन को ऊर्जा से भर देती है कृतज्ञता

हम जब साधन करते हैं, तो भीतर से बिल्कुल साफ - सुथरे होने लगते हैं। जीवन को देखने की हमारी दृष्टि बदल जाती है, लेकिन जैसे ही हम अहंकार से जुड़ते है भीतर का साफ - सुथरापन खत्म हो जाता है। उसमें कोई चीजों का मिश्रण होने लगता है। हमारे सोचने की शक्ति, बोलने का भाव, करने का तरीका सब दूषित होने लगता है। अंहकार गिराने का एक तरीका है - कृतज्ञता व्यक्त करते रहें। हनुमानभक्त श्रीरविशंकरजी रावतपुरा सरकार सरल भाषा में वयक्त करते हैं - व्यक्ति के लिए धन्यवाद देने से ज्यादा महत्वपूर्ण कोई दूसरा कर्तव्य नहीं है। जो व्यक्ति अपने वर्तमान उपहारों के प्रति कृतज्ञ नहीं है, वह भविष्य में प्राप्त होने वाली उपलब्धियों के प्रति आभारी नहीं होगा। जो दृष्टिकोण, जो विचार कृतज्ञता का द्वार बंद कर देते है, वह जीवन को कड़वा और निरर्थक बना देता है। ऐसी स्थिति में स्वार्थपरक दृष्टिकोण शीघ्र ही जीवन पर प्रभावी हो जाता है और जीवन के उस द्वार को बंद कर देता है, जिसमें से अच्छाइयां प्रवेश करती हैं। कृतज्ञता एक ऐसी शक्ति है, जो जीवन को ऊर्जा से भर देती है। व्यक्ति की अपनी शांति के दो शत्रु होते हैं - भविष्य की समस्याओं और संकटों पर चिंता करना तथा वर्तमान में प्राप्त उपहारों के प्रति कृतज्ञ न होना। अहंकार और कृतघ्नता का आपस में गहरा संबंध है। यदि आप गर्व करते हैं तो निश्चित है कि आप कृतज्ञ हो ही नहीं सकते। हमारे द्वारा बोले गए सहानुभूतिपूर्ण शब्दों में कुछ भी खर्च नहीं होता, लेकिन उनसे हासिल बहुत कुछ होता है। हमें यह प्रार्थना करनी चाहिए कि ऐ नेचर! मुझे एक कृतज्ञ हृदय प्रदान करों।

लम्हों ने ख़ता की, सदियों ने सज़ा पाई

आजकल "तहलका डॉट कॉम" या Sting operation का तहलका चारों तरफ मचा हुआ है। जो भृष्टाचार का रहस्योदघाटन होता है, वह हमारे देशवासियों के लिए शर्म से झुकने का मुकाम है। दूसरे देशों के सामने हमारी छवि कितनी घिनौनी पेश हो रही है। परन्तु यह कोई नये रहस्य नहीं, जो पहले किसी को पता नहीं था। हमारे देशवासियों की याद्दाश्त इतनी कमज़ोर है कि किसी घोटाले या दलाली के कारनामे सुनकर हम दुख के स्थान पर उसको अपने मनोरंजन का साधन बना लेते हैं। यदि ऐसा न हो तो हमारी संसद में, विधान सभाओं में यह भ्रष्ट नेता पहुँच ही कैसे सकते हैं परन्तु अब जो आम मनुष्य की मानसिकता है, वह है कि वोट देने के बाद कौन सा जन उनके नजायज़ स्वार्थो की पूर्ति कर सकता है, वही वोट का अधिकारी है, चाहे वह चोर, डाकू, कातिल और बड़े से बड़ा अपराधी क्यों न हो।

यदि ऐसा न हो तो जिन-जिन के विरुद्ध घोटालों वा भष्टाचार के केस चले हैं, वह आज नेता की कुर्सी पर विराजमान न होते। गुजरात के चुनाव में 25 में 15 दागी जन चुनाव जीतकर आए हैं। वह न केवल विराजमान ही हैं, परन्तु अपनी पार्टी को सशक्त बनाने के लिए और भ्रष्ट नेताओं से कभी एक पार्टी और कभी दूसरी पार्टी से गठबन्धन करते हैं। बिहार में कई बार संहार होने के बावजूद कांग्रेस लालू यादव को समर्थन देती रही है, जय ललिता के साथ चुनावी तालमेल बनाने के लिए तैयार हो जाती है। यही हाल सब पार्टियों का है। भाजपा जो अपनी स्वच्छ छवि का ढंढोरा पीटते हैं, उनका भी पूरा जलूस निकल चुका है। हमारी राजनैतिक मानसिकता इतनी पतित हो गई है कि सब एक दूसरे पर दोषारोपण करके सन्तुष्ट होने का प्रपंच रच रहे हैं। दरअसल "हमाम में सब नंगे हैं" की कहावत सब पर लागू होती है।

जब भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई, अंग्रेजों की गुलामी से तो छूट गए, परन्तु स्वार्थ की गुलामी ने हमारे देशवासियों को सर से पैरों तक भ्रष्ट कर दिया। जब भृष्टाचार की राजनैतिक स्तर पर एक घटना भी पता लगी थी, उसी वक्त उसका सख़्त ऐक्शन लिया जाता तो, किसी को सबक मिलता। मैंने एक जगह पढ़ा है कि पं० नेहरु के प्रधान मन्त्री काल में जीपें खरीदने का मामला प्रकाश में आया था, उस समय रक्षामन्त्री वी के कृष्ण मेनन के इसमें संलिप्त होने का आरोप था, जब एक घटना को अनदेखा कर दिया गया तो इन घटनाओं का सिलसिला लगातार चल पड़ा। फिर भष्टाचार को रोकने की बजाए, भ्रष्टाचारियों को बचाने के प्रयत्न शुरु हो गए, जो अब तक चल रहे हैं।

ऐसा लगता है कि आजकल सरकारी काम काज में, संस्थाओं में, यहां तक कि धर्म समाजों में भ्रष्टाचार को सहते सहते हमारी नई पीढ़ी यह जानने में ही असमर्थ हो जाएगी कि स्वच्छ छवि वाले जन भी इस धरती पर हैं, क्योंकि हमने नई पीढ़ी को अपनी उच्च सस्कृति, आदर्श, आचरण वा धरोहरों की जानकारी ही नहीं दी। इसलिए नैतिक मूल्य पूर्ण रूप से उच्च से उच्च लक्ष्य रखने वाली संस्थाओं से भी गुम होते जाते हैं। हमारा गौरवपूर्ण अतीत का धनी होना भविष्य के लिए कोई अर्थ नहीं रखता, जब हमारे नेता स्वार्थो से परिपूर्ण और सत्ता लोभी होकर देश और समाज की चिन्ता ही

भूल बैठे हैं और यह भी भूल गए कि देश का हित नहीं होगा तो हमारा हित कैसे संभव हैं

ऐसी पतित दशा में जन जागरण की आवश्यकता है। किसी अत्याचार को देखकर न बोलना, आवाज़ न उठाना, सयंम नहीं कायरता है। जब तक आम जनता अपना वोट अपराधी लोगों को देती रहेगी, तब तक देश का यही हशर होता रहेगा। अपराधी तत्व पूरी तरह से क्या देश की राजनीति में क्या हमारी समाजों में यहां तक कि शिक्षा संस्थाओं में भी गहरे घुस गए हैं।

किसी पद को प्राप्त करना आसान है, आज के समय चापलूसी के द्वारा अवांछित तत्व पदों के अधिकारी बन जाते हैं, परन्तु पद की प्रतिष्ठा और गरिमा को बनाएं रखने के लिए जिस ऊंचे आदर्श वा व्यवहारिक जीवन की अवश्यकता है, उसके अभाव से उन पदों के द्वारा जन भलाई, समाज भलाई वा संस्थाओं की भलाई के स्थान पर वह पद पूर्णरूप से शुद्ध स्वार्थो की पूर्ति के साधन बन जाते हैं।

आज जिस भ्रष्ट जीवन का प्रदर्शन हो रहा है, उसकी सज़ा आने वाली सदियां भुगतेंगी, इसमें कोई शक नहीं। ऐसी अवस्था में एक सशक्त नेतृत्व की आवश्यकता होती है, ऐसा नेता जिसको अपना निकट से निकट का जन भी प्रभावित न कर सके। सच्चाई के लिए अडिग हो। ऐसा एक जन ही लाखों करोड़ों से शक्तिशाली होता है। बेशक शुरू में उसकी शक्ति पर भरोसा न हो, पर समय उसकी शक्ति को स्थापित कर देता है।

सुरजीत बराड़

जीवन को हमेशा महकाती है कृतज्ञता की सुगंध

जीवन आंधी-तूफान, झोंके और बयार की तरह है ये सब हवा की शक्लें हैं। हवा में प्रवाह हो तो फायदे, नुकसान दोनों हैं, लेकिन सुगंध हो तो फायदे ही फायदे हैं। अगरबत्ती जलेगी तो धुंआ देगी ही, लेकिन सुगंध न हो तो बेकार है। इसी प्रकार जीवन के झोंकों में दूसरों के प्रति आभार, धन्यवाद, कृतज्ञता व्यक्त करना सुगंध के मानिंद है। जिंदगी को महकाना हो तो दूसरों को धन्यवाद देने के अवसर मत चूकिए। आप जितना अधिक कृतज्ञता से भरे रहेंगे, आपका शिकायती चित्त उतना ही विराम लेगा। आज हमारे जीवन में जरा भी विपरीत होता है तो शिकायती चित्त फौरन सक्रिय हो जाता है। या तो हम दूसरों से शिकायत करते हैं या खुद से ही शुरू हो जाते हैं। ध्यान रखें, अपने जीने के हर निर्माण कार्य में हम अकेले नहीं हैं, अनेक लोग शामिल होंगे इसमें। हमारे विकास, प्रगति और सुरक्षा में बहुतों का सहयोग है। दूसरों के सहयोग को अपने जीवन में इस प्रकार अंकित करें, जैसे पत्थर पर इबारत खोदी गई हो, जो अमिट रहती है। दूसरी तरफ, औरों से मिले असहयोग अपमान, दुर्व्यवहार को ऐसे जीवन में रखें, जैसे पानी पर लकीर खींची गई हो। जीवन के कार्य सहयोग से आरंभ हों और आभार पर अंत हो। जैसे छड़ी या डडे के दो उपयोग हैं- यदि प्रहार करें तो शस्त्र है और यदि सहारा लें तो उपयोग ही बदल जाएगा। छड़ी अपने दो सिरों के कारण ही छड़ी है। एक छोर पर हम हैं, दूसरे पर अन्य लोग। आभार रखेंगे तो छड़ी सेतु बन जाएगी, वरना लोग कृतज्ञता को भी हथियार की तरह इस्तेमाल कर ही लेते हैं।

अनोखे प्यार और त्याग की गाथा

ऐडवर्डा एक खुशमिजाज़, हाई स्कूल में पढ़ने वाली प्यारी सी बच्ची थी जो अचानक ही निमोनिया के कारण बीमार हुई और coma में चली गई। 42 साल coma में रहने के बाद इस वर्ष वह चिरनिद्रा मे समा गई। coma में जाने से पहले उसने अपनी माँ से कहा "Promis.... You won't leave me." माँ ने हामी भरी और कहा- "of course, I would never leave you, darling.."

वह अपने वचन पर दृढ़ रहीं। और दिन रात लगातार उस की सेवा में तत्पर रहीं। वह केवल 90मिनट तक ही एक बार में सोती थी। उस बच्ची को दो दो घंटे बाद करवट दिलाती थी ताकि Bed Sores न हो जाएं, दवाई और खाना tube के ज़रिये देती थी। उसे साफ सुथरा रखना उसके साथ बातें करना, किताबें पढ़ कर सुनाना, संगीत सुनाना आदि उनका रोज़ का काम था। मां ने अपनी बच्ची को किसी धर्मार्थ हस्तपताल में भर्ती नहीं करवाया और इस कारण उन्हें बहुत ही आर्थिक कठिनाइयों में से गुज़रना पड़ा। यह मां जिनका नाम Kaye O' Bara था 37 साल तक लगातार अपनी बेटी की सेवा करते करते अन्ततः 80 वर्ष की आयु में मृत्यु को प्राप्त हो गई ऐडवर्डा के पिता Joe इतनी परेशानियों को बरदाश्त न कर सके और बच्ची की बीमारी के सात साल बाद ही हार्ट अटैक के कारण परलोक सिधार गए।

माता पिता के चले जाने पर ऐडवर्डा को उसकी बहिन colleen ने संभाल लिया। उसने अपनी job छोड़ दी और दिन रात बहिन की सेवा शुश्रूषा में लग गई। वो कहती हैं कि मुझे यह फैसला करने में एक सैकण्ड भी नहीं लगा "वो मेरी बहिन है, मैं उसे प्यार करती हूँ।" वह प्यार के साथ उसके बाल संवारती थी और गले में थूक फंस न जाए, उसे निकालना, और उससे बातें करते रहना जैसे कि वह सब कुछ सुन रही है, यह उसकी दिनचर्या थी। दोस्त रिश्तेदार भी आते तो ऐडवर्डा को संगीत सुनाते, और किताबें पढ़ पढ़ कर सुनाते।

डा॰ वेन डायर (Dr. Wayne Dyer) भी उस घर में स्वयं पहुंचे और उन्होंने जो वहाँ देखा और जो महसूस किया, उसके विषय में पुस्तक लिखी " A Promise is a Promise: An Almost Unbelievable story of Mother's Unconditional Love and What it can Teach us," जिसकी royalty उन्होंने उसी परिवार के लिए समर्पित कर दी थी।

इस पुस्तक की प्रसिद्धि दूर दूर फैल गई और इसलिए दूर दूर से लोग इस अनोखे दृश्य को देखने के लिए और उस परिवार को उत्साहित करने के लिए आने लगे। Collen कहती हैं कि मुझे इस प्रकार घर में आने वाले अपरिचितों को देख देख कर यह सीखना पड़ा कि यह अपरिचित नहीं हैं।

(मेल टुडे से साभार)

श्री देव गुरू भगवान् के सम्बन्ध में मेरी आंखों देखी घटनाएं

यह आंखों देखी घटनाएं भगवान देवात्मा के फिलासफर शिष्य विशेष सम्मान के योग्य श्री मान पी०वी० कनल जी एम०ए०, एल०एल०बी० द्वारा लिखी गई है: अपने मुख्य लक्ष्य की जय पर भगवान का अटल विश्वास: -

भगवान ने इस के सम्बन्ध में कई बार इस प्रकार इजहार फरमाया है: -

"मैं नेचर के विकास के नियम को पूरा करता हूँ। मैं मनुष्य जीवन के सर्वोच्च विकास में पूरी तनदही से सहायता करता हूँ। नेचर का यह सबसे उच्च लक्ष्य है, और इसी लक्ष्य को पूरा करने के लिए नेचर ने मुझे आविर्भूत किया है। तब फिर मैं पराजित कैसे हो सकता हूँ? कदापि नही। कदापि नहीं।"

भगवान का यह भाव आक्षरश: ठीक है, भगवान ने अपना यह अटल विश्वास अपने कई तुच्छ सेवकों के भीतर भी संचार कर दिया है। एक बार जब मैं समाज की कई संस्थाओं आदि के लिए दान एकत्र करने के लिए जाने लगा, तब भगवान ने कृपा करके इस विषय में मुझ से कुछ बातचीत की थी, इसमें उन्होंने फरमाया था कि उनके लक्ष्य की जय पर जितना मेरा विश्वास होगा, उतना ही मुझे सफलता प्राप्त होगी फिर उन्होंने अपने जीवन की कई घटनाएं बताई और इस सिलसिले में फरमाया कि जब श्रीमान देवत्व सिंह जी अपने शुरू के जमाने में एक ऐसे प्रान्त में प्रचार करने के लिए दौरे पर गए कि जहां पर उनके सिर ढकने के लिए भी कोई जगह न थी। तब हमने उनहें कहा था कि पहले तुम अपने रहने के लिए एक मामूली सी झोपड़ी बना लो और फिर आहिस्ता - आहिस्ता मन्दिर भी बन जाएंगे। इसलिए उन्होनें ऐसा ही किया और इसके बाद उस इलाके में देव समाज के साधन आश्रम भी बन गए। फिर भगवान ने फरमाया -

13 जून 1952 ई० में पूजनीय भगवान की आज्ञा के मुताबिक महाराज के इलाके में प्रचार करने के लिए चले गये थे। श्रीमान जी जिस समय महाराज में पहुँचे, उस समय चंद विद्यार्थी और 2-3 और जन समाज के काम के लिए श्रद्धा रखते थे।

श्रीमान जी के ठहरने के लिए कोई जगह नहीं थी। उन्होने नगर से एक बाहर पुराने मकान में ठहरने का इरादा किया जो किसी काल में साधुओं का डेरा था। और बहुत खराब और चमगादड़ों का घर बना हुआ था। उसके फर्श पर चमगादड़ों की गन्दगी चिपकी हुई थी। बहुत साफ और सुन्दर मकानों की रहने से विदा होकर भी इस अनोखे फकीर ने उसको खूब साफ कर अपना कम्बल बिछा कर रहना आरम्भ किया। उसके लिए वहाँ पर न पानी का प्रबंध था और न खाने का, जहाँ से जो कुछ मिल जाता खा लेते थे। कुछ समय के बाद एक भद्रजन ने अपने पशुओं वाले मकान में से एक छोटी सी कोठड़ी खाली कर दी। आखिर पूजनीय भगवान जी ने श्रीमान् जी को जैसे फरमाया था पहले तुम अपने रहने के लिए एक मामूली सी झोपड़ी बना लो फिर आहिस्ता आहिस्ता मंदिर बन जायेंगे। इसके बाद उस इलाके में कई स्थानों पर मंदिर बन गये। उस इलाके में बड़े बड़े पापी बदल गये और कितने उजड़ते हुऐ परिवार बस गये, इस अनोखे फकीर के संग्राम से अनगिणत कर्मचारी पैदा हुए।

जीवन प्रसंग
गलतियों का आकलन करने से बेहतर बन सकेंगे

हाल ही में मुझे अमेरिका में महात्मा गांधी के पोते अरूण गांधी से मिलने का मौका मिला। मुझे महसूस हुआ कि गांधी को जानने के लिए अरुण गांधी सही व्यक्ति हैं। मैंने अरुण को महात्मा के साथ गुजारे यादगार पलों के बारे में बताने को कहा। अरुण ने मुझे एक ऐसा किस्सा सुनाया जो मैंने पहले नहीं सुना था। ये तब की बात है जब गांधी जी अफ्रीका में लॉ प्रैक्टिस कर रहे थे। वे जोहानिसबर्ग से 18 किलोमीटर आगे रहते थे। क्योंकि सभी कोर्ट जोहानिसबर्ग में थे इसलिए गांधी जी रोज वहां आते-जाते थे। इसी दौरान उन्हें मालूम चला कि उनके बेटे ने उनसे इजाजत लिए बिना ड्राइविंग सीख ली है। गांधी जी ने अपने बेटे से इसका कारण पूछा। बेटे ने कहा कि पूछने पर वे कभी उसे ड्राइविंग सीखने की इजाजत न देते।

गांधी जी ने अपने बेटे को बिना किसी डर खुलकर बोलने को कहा। अगले दिन उनकी कोर्ट में मीटिंग थी इसलिए गांधी जी ने बेटे को कार से उन्हें जोहानिसबर्ग ले जाने को कहा। ये सुनकर बेटा काफी खुश हुआ। अगले दिन गांधी जी अपने बेटे के साथ जोहानिबर्ग गए। उन्हें बेटे के ड्राइविंग स्किल्स अच्छे लगे। उन्होंने बेटे से उन्हें कोर्ट छोडने के बाद गाड़ी सर्विस कराने के बाद 3.15 बजे कोर्ट में वापस आने को कहा। पिता को कोर्ट छोड़ने के बाद बेटा सर्विस स्टेशन गया। सुबह ग्यारह बजे गाड़ी की सर्विस पूरी हो गई। अभी बेटे के पास पिता को लेने जाने के लिए चार घंटे थे। बेटे ने इस समय का फायदा उठाने का सोचा। उसने अपने दोस्तों को इक्ट्ठा किया और ड्राइव पर चला गया। वापसी में वे रास्ता भूल गया जिस वजह से वे 4.30 बजे कोर्ट पहुंचा। उसने पिता को परेशानी में घिरा और कोर्ट की सीढ़ियां उतरते-चढ़ते देखा। गाड़ी से उतरते ही वे पिता को बहाने सुनाने लगा और बोला कि सर्विस स्टेशन में गाड़ियां ज्यादा होने की वजह से देरी हो गई।

गांधी जी ने कहा कि वे पंद्रह मिनट इंतजार करने के बाद सर्विस स्टेशन गए थे जहां उन्हें पता चला कि गाड़ी की सर्विस 11 बजे पूरी हो गई थी। गांधी जी ने बेटे से झूठ बोलने का कारण पूछा। बेटे ने ये सुनकर पिता से माफी मांगी और कहा कि वह डर गया था। उसने बताया कि वे अपने दोस्तों के साथ ड्राइव के लिए गया था। गांधी जी चुप रहे और बेटे को गाड़ी घर ले जाने का आदेश दिया। बेटे ने पिता से पूछा कि वे घर कैसे आएंगे? इस पर गांधी जी ने जवाब दिया कि वे 18 किलोमीटर पैदल चलेंगे और पूरा रास्ते सोचेंगे कि उन्हेंने बेटे की परवरिश में क्या गलतियां की जिससे बेटा अपने पिता से सच बोलने में डर रहा है। उस दिन गांधी जी पूरा रास्ता पैदल चले। बेटा गाड़ी को धीरे-धीरे पिता के पीछे चलाता रहा। बेटे ने बहुत बार पिता से गाड़ी में बैठने को कहा लेकिन पिता ने एक न सुनी। कोर्ट से घर पहुंचने के इन छह से आठ घंटों में दोनों पिता और बेटे ने गलतियों के बारे में सोचा और बेहतर बनने की कोशिश की।

हम अक्सर अपनी जिंदगी में इतने व्यस्त हो जाते हें कि अपनी परछाई से कुछ नहीं सीखते। जबकि अपनी गतिविधियों का आकलन करें। हम अपनी गतिविधियों और व्यवहार को जितना गौर से देखेंगे, हम उतना बेहतर बन सकेंगे।

विजय बत्रा
(अमेरिका और जापान में माटिवेशनल स्पीकर की ख्याति प्राप्त)

शुभ संग्राम

मानसा 16.11.12 शाम 7.30 बजे चण्डीगढ़ से श्रीमान बलदेव सिंह जी, और श्रीमान रूबिन्द्रपालजी मानसा पहुंच गए। यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई, इसमें बताया गया कि मनुष्य भिन्न भिन्न विषयों में अज्ञानी है। अन्धेरे में है। सेहत के सम्बन्ध ,में विद्या, कारोबार व्यापार आदि के सम्बन्ध में अकसर अज्ञानी होते हैं, परन्तु सबसे बढ़कर अज्ञानी धर्म के सम्बन्ध में है। तरह तरह की पूजा पाठ व जाप आदि को धर्म समझा जाता है। या कुछ चिन्ह धारण करने को, पहरावे को धर्म समझा जाता है। परन्तु देव समाज के बानी ने धर्म को अपने सम्बन्धों में व्यवहारों को बताया है। अच्छा बनना ही असल धर्म है। अच्छा बेटा, अच्छा पति, अच्छा भाई, अच्छा पिता आदि बनना ही धर्म है। चारों जगतो से उच्च भावों से जुड़कर व्यवहार करना ही धर्म है। कई उदाहरणों से इस विषय को स्पष्ट किया गया। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी इस विषय पर कुछ ब्यान किया।

17.11.12 सुबह 8 बजे :- यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई इसमें बताया गया कि विरासत और वातावरण दो महत्व पूर्ण कारण हैं, जिनका जीवन को सफल या असफल बनाने में सबसे बडा योगदान है। जो संस्कार मनुष्य को प्राप्त होते हैं, वह विरासत का ही हिस्सा हैं। मुस्लिम परिवारों को बकरीद मनाने के संस्कार मिलते हैं, लाखों पशुओं का खून बहाया जाता है। शारीरिक रंग रूप भी विरासत में ही मिलता है। मनुष्य का स्वभाव भी विरासत में मिलता है। केवल वातावरण ही चुना जा सकता है। नीच वातावरण नीच और उच्च वातावरण उच्च बनाता है। भगवान देवात्मा जो देव प्रभावों के द्वारा वातावरण पैदा करते हैं, वह दुर्लभ वा परमहितकर वातावरण है। जो अधिकारी आत्मा इससे जुड़ जाते हैं, उनका अथाह हित होता है।

17.11.12 11 बजे एक सभा श्रीमान कपूरचन्द जी के सपुत्र के घर की गई। 4-5 डाक्टर साहिबान, एक प्रिंसीपल, कुछ अध्यापिक और कुछ और जन भी सभा में शामिल हुए। यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई, जिसमें बताया कि हम बहुत सा ज्ञान रखकर भी अपने विषय में अज्ञानी हैं। हम नहीं जानते हमें कौन से भाव चलाते हैं। मनुष्य का कौन सा सुख अनुराग उसका क्या बना रहा है। वह किस दिशा में परिवर्तित हो रहा है। यह भाव प्रबल रूप से हमें चलाते हैं। हमारी पेश नहीं चलती हाजरीन ने अनुभव किया कि सचमुच हम इस पक्ष में अन्धेरे में है। डाक्टर सुबोध कुमार जी ने श्रीमान जी का धन्यवाद किया।

सरसा - 3 बजे: श्रीमान राजीव गर्ग जी के घर एक सभा की गई। दो धर्म सम्बन्धी मल्लेका से पहुंच गए। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने सभा में बताया कि देव समाज में प्रवेश करके खुशीयां और बरकतें मिलती हैं। उच्च मेल की प्राप्ति होती है, संसारिक तरक्की मिलती है। सत्संग न मिले और साहित्य वा पुस्तकों का पाठ भी न हो तो बरकतें हाथ से चली जाती हैं। इसलिए परम पू० भगवान के पैदा किए सत्संग से जुड़े रहने की अवश्यकता है। उत्सवों में चावभाव से शामिल होना चाहिए। सभापति जी ने अपने पति पत्नी के रिश्ते में आई तबदीली का ब्यान किया।

मल्लेका 18.11.2012 शाम 8 बजे: इस सभा में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि दुनियां में बहुत पाप कर्म हो रहे हैं, पर साथ 2 धर्म

स्थानों की गिणती भी बढ़ती जाती है। परन्तु सम्बन्धों में जुल्म, पापाचार, अन्याय बढ़ रहा है। भाई भाई से कत्ल हो रहा है, पैसे की दौड़ है, पर प्रभुत्व की दौड़ जारी है। चरित्र हीन व्यक्ति धार्मिक संस्थाओं के मुखिया बनाए जा रहे हैं। अपने भावों वा शक्तियों का ज्ञान नहीं। इससे जो विनाश होता है, उससे इन्सान अन्धा है। पू० भगवान का दर केवल मात्र ऐसा दर है, जहां ऐसी रोशनी मिलती है, जिसमें पापों के नतीजे साफ नज़र आते है। पापों से निकलने की प्रेरणाएं मिलती हैं। सभापति जी ने इस विषय में सुन्दर उदाहरण पेश किए। फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी इस पाप की रौ में बहते हुओं के लिए भगवान का एक मात्र दर बताया, जो घरों में स्वर्ग लाते हैं। कई उदाहरणें पेश की।

19.11.2012 सुबह 8.30 बजे: यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। सभा में बताया कि कोई जाप, पाठ धर्म नहीं। सभा करवाना भी धर्म नहीं। उच्च व्यवहार ही धर्म हैं। सम्मान भाव, श्रद्धा भाव, शुकरगुजारी, पवित्रता, न्याय, ईमानदारी, हानिपरिशोध, हमदर्दी उच्च भावों के नाम हैं, जितनी गहराई में यह भाव किसी जन में होंगे, उतना ही वह ज़्यादा धार्मिक होगा। फिर सभापति जी ने बताया कि शुक्रगुजारी ऐसा भाव है जो अकसर मानवता में पाया नहीं जाता। जो मनुष्य सेवा पाकर धन्यवाद का शब्द भी नहीं कहता, वह तो शिष्टाचार के भी विरूद्ध है। परन्तु यह शुक्रगुज़ारी नहीं। शुक्रगुजारी के चार अंग हैं। पहला, उपकार को सदा याद करते रहना। दूसरा उस उपकारी के रूप को सुन्दर और श्रेष्ट रूप में देखना, तीसरा उपकारी के उपकार को छाती पर बोझ की न्याई अनुभव करना चौथा उस बोझ को उतारने के लिए प्रेरणाएं अनुभव करना और कर्ज़ा उतारने की गतियां करना। उदाहरणों द्वारा इस भाव की सुन्दरता को हाजरीन पर पेश किया, जो बहुत प्रभावदायक था।

19.11.12 शाम को 7.30 बजे: – यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। उन्होंने पू० भगवान का यह वाक्य दुहराया "जो शख़्स उपकार पाकर प्रति उपकार नहीं करता, वह हमारे निकट खुदगर्ज़, कमीना, और पापी कहलाता है" सभापति जी ने बताया कि अकृतघ्न जन इस घरती पर बोझ है। बताया कि एक कृतघ्न पत्नी के दुर्व्यहार से पति को आत्म हत्या करने के लिए मजबूर होना पड़ा। कृतघ्नता के कारण ही old homes(वृद्ध आश्रम) भरे पड़े हैं। वृद्ध आश्रमों के दुखदाई दृष्य पेश किए गए। कृतज्ञता की सुन्दर उदाहरणें पेश की गई, कैसे खुदगर्ज़ पति बदले है और खुदगर्ज़ बच्चे बदले हैं, यह पू० भगवान अद्वितीय कारज कर रहे हैं। सारा ब्यान बहुत प्रभावशाली था।

20.11.2012 सुबह 9 बजे सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि यदि कोई आदमी हिल नहीं रहा, तो हम उसकी नबज़ देखकर बता सकते हैं कि वह मुरदा है या जिन्दा है। आदमी आत्मिक तौर पर जीवित है या मुर्दा है, हम दो निशानियों से पहचान सकते हैं। पहली निशानी है कि क्या उसे अपने से कोई बड़ा या महान नज़र आता है, उसका सिर उसके आगे झुकता है, उसके गुण देख सकता है। दूसरी निशानी है कि वह अपने दोष, पाप या नीच गतियों को देख सकता है, उन पर दुखी होता है। यह जीवित आत्मा की निशानी है। फिर श्री सभापति जी ने दो जनों के बहुत सुन्दर गुणों का वर्णन किया, उनमें से एक महान व्यक्ति के उन्होंने 15 वर्ष की उमर में

दर्शन किए थे, ब्यान बहुत हृदय स्पर्षिय था। फिर फादर डैमियन के सुन्दर, महान वा परोपकारी जीवन का ब्यान किया। फिर श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के गुणों का भरे दिल से ब्यान किया। बहुत प्रभाव दायक वातावरण बना।

20.11.2012 शाम 7.30 बजे: - श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने विज्ञान मूलक देव धर्म के विषय में ब्यान किया। इसकी शिक्षा नेचर के नियमों वा घटनाओं पर अधारित है। देव धर्म मिथ्या विश्वासों की हानियों से सुरक्षा करता है। साधारण सेवक भी मिथ्या वा पापाचार से बचा रहता है। हम इस कारण जेलों, दुर्घटनाओं, लड़ाईयों और बदनामियों से बचे हैं। बेवक्त मौत से बचाया है। अपने ऊपर हुए उपकारों को बहुत अच्छे भावों से ब्यान किया।

21.11.2012 सुबह 9 बजे: - सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि हमें सभाओं में बहुत ज्ञान मिलता है, परन्तु जो ज्ञान अमल में आए उसी का लाभ है। मनुष्य में बहुत कमज़ोरिया हैं। कबीर जी ने कहा है, "मैं अपराधी जन्म का, नख़ सिख भरे विकार" परन्तु मनुष्य को अपने आप अपनी कमियां नज़र नहीं आती। जो मनुष्य अपनी ग़ल्ती देख सकता है, उसे स्वीकार करके क्षमा मांग सकता है, वह बहादुर है। जो गल्ती दिखाने वाले को उपकारी समझकर धन्यवाद दे सकता है, वह और भी बहादुर है। परन्तु बहुत कम इन्सान ऐसे बहादुर होते हैं। परम पू० भगवान का बल पाकर मनुष्य ऐसे बहादुर बन जाते हैं, मुआफी मांगने के योग्य हो जाते हैं। मनुष्य का घमंड भाव क्षमा नहीं मांगने देता। राष्ट्रपती इर्बाहिम लिंकन के भीतर मुआफ करने की खूबी थी। उसकी उदाहरणें दी गई। ईसा मसीह के भीतर क्षमा करने की योग्यता थी यह सभा बहुत प्रभावशाली थी, कई जन आंसू बहा रहे थे।

गंगानगर, 21.11.2012 शाम 8 बजे: - यह सभा श्रीमान गोपाल किशन जी के घर की गई। पदमपुर से डा० मुन्शा सिंह जी भी पहुंच गए थे। यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें झूठे विश्वासों, वहमों, आर्शीवादों वा ईलाजों की कोई जगह नहीं। सम्बन्धों में उच्च भावों द्वारा की गई गतियां ही धर्म है। अपने एक परिवर्तन का भी अच्छे भावों से भरकर ब्यान किया।

22.11.2012, सुबह 8.30 बजे: - यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। बताया कि पशु अन्धेरे का जीव है, मनुष्य पशुओं से आया है, इसलिए वह भी अन्धेरे में रहने के लिए मजबूर है। सबसे बढ़कर अन्धेरा धर्म के सम्बन्ध में है। कोई, कीर्तन, पाठ वा जाप करके धार्मिक समझता है, यह धर्म नहीं। जैसे सेहत के नियम हैं, धर्म के भी नियम हैं। अच्छे भाव श्रद्धा शुक्रगुजारी, ईमानदारी, पवित्रता धर्म के भाव हैं। इन भावों द्वारा सम्बन्धों में सेवा करके धर्म आता है। सभापति जी ने अपने वा अन्य जीवनों के परिवर्तन ब्यान किए।

पदमपुर 22.11.2012 सुबह 8.30 बजे: - सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि मनुष्य अपने भावों के हाथों का खिलौना है। नीच भाव की तृप्ति में लगाए रखते हैं। नशों का सुख तबाही की ओर ले जाता है। इन भावों के हाथों जो कतल, ग़ारत होते हैं, उनकी उदाहरणें दी।

23.11.2012 सुबह 9 बजे : - इस सभा में श्रीमान बलेदव सिंह जीने बताया कि सुख अनुराग मनुष्य को कलंकी बना देते हैं। भाई भाई स्वार्थ और

धन अनुराग से कतल हो जाते हैं। पौंटी चड़डा का उदाहरण दिया। पति पत्नी अपने सुखों के पूरा न होने पर लड़ते हैं। पू० भगवान ने फरमाया है कि "नीच सुख अनुराग वा नीच घृणाएं मनुष्य की शत्रु हैं। मनुष्य कामी, क्रोधी, आलसी हैं, इन रोगों की भयानकता का पता देव गुरू की देव ज्योति में लगता है। घमंडी और अंहकारी जन ऊंचा वा गल्त बोलता है। मनुष्य नूर नहीं, आत्मिक रोगी है। हमारे पास एक ही रास्ता है कि देवात्मा की देव ज्योति और देव तेज को पाएं, और अपने आप को देखें।

23.11.2012 रात 8.30 बजे:- इस सभा में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि नेचर के नियम अटल हैं, इसलिए कोई करामात, कोई कृपा वा श्राप नहीं होता। नेचर की घटनाएं नेचर की शक्तियों द्वारा होती हैं। कोई दाना तभी पौधा बन सकता है यदि उसमें योग्यता हो, यदि वह बीज जीवित नहीं तो कोई दैवी शक्ति उसमें पौधा पैदा नहीं कर सकती। बच्चों की शिक्षा, ईलाज आदि के नियम हैं। अध्यात्मिक जीवन में भी नियम काम करते हैं देव समाज में आकर जो उच्च परिवर्तन आते हैं उनके भी नियम हैं। उन नियमों पर रोशनी पाई।

24.11.2012 सुबह 9 बजे:- इस सभा में बताया गया कि विकास के नियम ने घरेलू उत्पादनों का इतना विकास कर दिया कि ग्रहणी का काम सुगम हो गया है। परन्तु मनुष्य के स्वभाव के विकास का कोई काम नहीं हो रहा, इसका क्या कारण है। धर्म के अनेकों साधन और ग्रन्थ हैं। परन्तु पापाचार, दुराचार, बलात्कार बढ़ रहे हैं। इसका कारण है कि मनुष्य का ध्यान अपनी ओर नहीं जा रहा। शीशे से पहले चेहरा नहीं देख सकते थे। X-Ray के बिना अन्दरूनी अंगों का पता नहीं लगता था। इसी प्रकार पू० भगवान की ज्योति के बिना मनुष्य के आत्मा का अन्दरूनी हाल दिखाई नहीं देता। केवल देव ज्योति ही मनुष्य की नीच गतियों, उसके अपराधों, दोषों को दिखा सकती है। श्रद्धेय श्रीमान धर्म बल जी को अपने बेटे के सम्बन्ध में जब अपराधी रूप नज़र आया तो वह उन्होंने बेटे के पैरों पर पगड़ी रख दी। मुझे भी इस ज्योति के बिना अपना आप निर्दोष नज़र आता था। इस प्रकार और जनों के भी उदाहरण दिए, जिन्हें अपना असली रूप नज़र आया।

24.11.2012 रात 8.30 बजे:- इस सभा में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि हमारा भला वा बुरा समाज पर निर्भर है। दुनियां में कोई घटना किसी देश में होती है, उसका प्रभाव अब सब पर पड़ता है। पाकिस्तान की लड़की मलाला पर गोली चली तो सारे देश हिल गए। उस जुल्म को महसूस किया अन्धे धर्म विश्वासों में कट्टर लोग पाप कर्म करने के लिए मजबूर होते हैं। धर्म के नाम पर जुल्म और अत्याचार होता है। धर्म का काम है समाज का विकास करना। परम पू० भगवान ने ऐसा सच्चा धर्म मनुष्य समाज को दिया है, जो हर स्तर पर समाज की सच्ची सेवा करता है। धर्म का काम मानव समाज की सेवा करना है। देवात्मा के देव प्रभाव पाकर मनुष्य अपनी हानि लाभ देखने के योग्य बनता है और अपना दुश्मन नहीं रहता, अपने परिवार का भी मित्र बन जाता है। नीच सुख अनुराग मनुष्य को अपना, अपने परिवार वा समाज का शत्रु बना देते हैं। परम पू० भगवान देवात्मा नें ऐसे परिवर्तन पैदा किए हैं, मनुष्यों को उनके सुख अनुरागों से बचाया है, उन्हें सेवाकारी वा विकासकारी जीव बनाया है। परोपकारी अध्यापिक, प्रिंसीपल, डाक्टर,

पटवारी और अफसर, जिन्हें लोग फरिश्ता के नाम से जानते थे, इस धर्म की देन हैं।

25.11.2012 सुबह 9 बजे:- इस सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि देवात्मा का आर्विभाव विकासकारी क्रम की देन है। उन्होंने नये वाक्य सुनाए हैं, यह नया वाक्य है कि मनुष्य के पाप वा दुख की जड़ उसके सुख अनुराग हैं। धर्म वह चीज है जो आत्मा की रक्षा और विकास में मददगार होता है। पापाचार आत्मा को दुर्बल बनाता है। मिथ्याचार भी आत्मिक बिमारी है। धर्म का काम है, सन्मान, श्रद्धा, शुक्रगुजारी, हमदर्दी को बढ़ाना। सभापति जी ने उच्च भावों की महिमा का ब्यान किया। श्री गुरू अंगद देव जी का यह वाक्य सुनाते हुए उनका गला भर आया

"जो सौ चन्दा उगवें, सूरज चढ़े हज़ार,
ऐते चानन हुंदिया, गुरू बिन घोर अन्धार"

25.11.2012 इस सभा में श्रीमान बलबहादुर जी ने बताया कि मनुष्य जब शिष्टाचार वश भी धन्यवाद नहीं करता तो वह वहशी है। आम करके मनुष्य स्वार्थी है, इस कारण नाशुकरे हैं। कई कृतघ्न मनुष्यों के उदाहरण दिए। फिर शुक्रगुजारी के उदाहरण दिए। परम पू० भगवान देवात्मा नाशुकरे पतियों कों शुक्रगुजार पति बनाते हैं। शुक्रगुजार बेटे बेटीयां बनाते हैं हृदयगत कामना की कि मैं कृतघ्न सेवक न बनूं, बल्कि कुछ मिशन के लिए करके शुक्रगुजार बन सकूं।

<u>26.11.2012 सुबह 9 बजे:</u>-सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि भगवान देवात्मा निष्कलंक रूप लेकर पधारे हैं, उन्होंने धर्म में नये वाक्य सुनाए हैं। उन्होंने बताया कि नीच सुखों के इश्क मनुष्य मात्र के हृदयों पर हावी हैं। उनसे हमेशा अन्धेरा पैदा होता है। मनुष्य का आत्मा कैसे बचता है यह अहंकार दिखने नहीं देता। मनुष्य और पक्षों को छोड़कर चार पक्षों में अन्धेरे में है। हम महान जनों के गुण देखने सम्बन्धी अन्धेरे में हैं, उनकी महिमा को देख नहीं सकते। दूसरा हम उपकारियों के उपकार देखने के सम्बन्ध में और उनका कर्ज़ा चुकाने के सम्बन्ध में अन्धेरे में है तीसरा हमें पराया दुख दिखाई नहीं देता, दुख दूर तो क्या करना था। चौथा हम अपनी नीचता, अपने दोष और अपराध देखने के सम्बन्ध में अन्धेरे में हैं। देवात्मा का जहूर इस अन्धेपन को दूर करने के लिए हुआ है, वह यह अन्धापन दूर कर रहे हैं।

<u>शाम 8.30 बजे:</u>-सभा में श्रीमान बलेदव सिंह जी ने बताया कि मनुष्य ब्रह्म स्वरूप नहीं, वह किसी नूर से नहीं उपजा, वह नीच सुखों का आशिक है, इसलिए मिथ्या वा पाप स्त्रोत है। सचाई भलाई का कातिल है। वह मोह वा अज्ञान ग्रस्त है। यह उसके नाश के कारण हैं। धन, धरती की लालसा का हर जन गुलाम है। धन नौकर रहने के लिए है मालिक बनने के लिए नहीं। धन जीवन का लक्ष्य नहीं वह चोर और डाकू बनाता है। यह बाप बेटे को, पति पत्नी को, भाई भाई को, दोस्त मित्र को दुश्मन बना देता है। गुरू महाराज इसकी गुलामी से बचाते हैं। इसकी गुलामी परलोक में भी जाने नहीं देती। सभा काफी प्रभाव शाली थी। पीछे से प्रसाद की तरह मिठाई बांटी गई।

27 नवम्बर सुबह 9 बजे:- यह इस दौरे की आख़री सभा थी। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि परहित में ही हमारा हित निहित है। दूसरों के काम आने में ही हमारा सच्चा भला है। रोज की खुराक की

Published on 5th of the month
20
जनवरी – 2013
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

तरह यह आत्मा की खुराक है। दाता जी और परोपकारियों के उदाहरण दिए गए। दो जन गंगानगर से और दो गजसिंह पुरा से आकर शामिल हुए। 1220 रू० दान प्राप्त हुआ। कुछ पुस्तकें भी दी गई। कुछ जनों ने समाज से निकटता अनुभव की।

डबवाली 3 दिसम्बर को श्रीमान बलदेव सिंह जी और जगदीष जी देव धर्म मिशन के मन्दिर में पहुंचे। यहां दुपहिर तक ठहरकर कई ज़रूरी काम निपटाए।

थराजवाला :– यहां शाम को बलदेव सिंह जी के परिवार और कुछ जनों को लेकर सभा रखी गई, घरों में जाकर पता दिया। श्रीमान जी ने बताया कि मनुष्य घर – घर दुखी हैं। उसको परमात्मा का कोप होना माना जाता है, इसलिए उसे रिझाने के लिए खूब पूजा पाठ किए जाते हैं, परन्तु दुख दूर नहीं होते। पू० भगवान अपनी रोशनी में दिखाते हैं कि हमारे दुखों के कारण क्या हैं। दुखों के कारण हमारे नीच अनुराग हैं जो हमारे भीतर हैं। उन्हें जानने की अवश्यकता है। गुरू महाराज की ज्योति जब अधिकारी आत्माओं को मिलती है, तो उन्हें वह कारण नज़र आते हैं और उन्हें दूर करने का बल मिलता है। नारकिय जीवन से मुक्ति मिलती है।

अगले दिन सुबह 9 बजे सभा रखी गई। गांव वासियों के घरों में जाकर सभा का पता दिया। इस सभा में बताया गया कि जैसे कैंसर का पता नहीं लगता, अन्दर फैलकर ख़त्म कर देता है, इसी प्रकार मनुष्य के भीतर पाप शक्तियां बढ़ जाती हैं और मनुष्य का नाश कर देती हैं, वह नज़र नहीं आती और मनुष्य को दुखी और वर्बाद कर देती हैं। हर मनुष्य सुख का दास है। सुख की दासता ही पाप करवाती है, अथाह हानि पहुंचाती है। गुरू महाराज की ज्योति उसे दिखाती है। ठोस घटनाएं बताई गई। हाजरीन ने किसी अंश लाभ उठाया।

सबको महोत्सव सम्बन्धी कार्ड दिए गए। बलदेव सिंह जी की धर्म पत्नी ने 500 रू० दान दिया और गुरूदेव सिंह जी ने 100 रू० चन्दा अखबार दिया।

गोनियाना मण्डी 4 तारीख़ को श्रीमान जी यहां पहुंचे। कई परिवारों को मिले। श्रीमान मुख़्तियार सिंह जी के पोते की शादी पर मुबारक बाद दी। महोत्सव पर आने की प्रेरणा की।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – देव – धर्म – मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*
म. नं. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts